Journal of Socio-Educational & Cultural Research, Vol. 2, No. 5, July-December, 2016 ISSN : 2394-2878

झारखण्ड राज्य में सदानों की सांस्कृतिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (रॉची नगर के संदर्भ में)

डॉ0 गंगा केवट*

झारखण्ड के सदानों की परंपरा बहुत पुरानी है। आदिवासीयों में मूर्तिपूजा का प्रचलन नही है। गढ़ और महल बनाने में भी उनका विश्वास नही है। तब जाहिर है कि झारखण्ड के विस्तृत इलाके में चौथी शताब्दी ई0पू0 से पुरातात्विक अवशेषो की लम्बी श्रृंखला सदानों की देन है। इनकी सदानों का पूर्वज थे। लिस्ट ऑफ मोनुमेन्टस इन दि छोटानागपुर डिविजन पुस्तक में चौथी शताब्दी ई0पू0 से 1872 तक सैकड़ो पुरातात्विक अवशेषो एवं बौध, जैन, शैव, शक्त वैशव आदि परंपराओं के साक्ष्य है। इससे साबित होता है कि झारखण्ड में सदान प्राचिन काल से रहते चले आ रहे है।

सदान का अर्थ निम्न दृष्टि से स्पष्ट किया जा सकता है। व्युत्पति की दृष्टि से सदान शब्द 'आन' प्रत्यय से बना है जैसे – सद+आन –सदान। ''सदान शब्द का उद्‌गम 'सदा' शब्द से हुआ है और सदा से छोटानागपुर में सहते आए है''[1]

भाषा की दृष्टि से – नागपुरी, पंचपरगनियॉ, कुरमाली एवं खोरठा आदि भाषा बालने वाली गैर जनजातियॉ ही सदान है। सदान एक समुदाय है।

धर्म की दृष्टि से – भी हिन्दु, इस्लाम, बौध, जैन, आदि धर्मावलम्बी भी सदान है जिनकी मातृभाषा नागपुरी, खोरठा, पंचपरगनियॉ एवं कुरमाली आदि है।

प्रजातिय दृष्टि से – सदान आर्य है। कुड द्रविड़वंशी एवं आग्नेय कुल के लाग भी सदान है। जिनकी भाषा सादरी है।

अतः निष्कर्ष रूप से सदान ऐसी गैर आदिवासी समुदाय को कह सकते है जो कम से कम झारखण्ड राज्य में दो तीन पीढ़ियों से रह रहे है जिनकी मातृ भाषा सदानी है या रही है। अर्थात जिनकी भाषा सादरी(नागपुरी) पंचपरगनियॉ, कुरमाली एवं खोरठा आदि हो और जिनकी एक पहचान एवं संस्कुति बन गई है सदान कहलाता है।

सदानों की सांस्कृतिक स्थिति :–

सदानों की सांस्कृतिक स्थिति को समझने से पहले संस्कृति क्या है? इसकी चर्चा करेगें।

मजूमदार एवं मदान ने – अपनी पुस्तक ''ऐन इन्ट्रोडक्सन ऑफ सोशल एनथ्रोपोलोजी'' में लिखा है कि ''लोगों के जीने के ढ़ग को ही संस्कृति कहा है''[2]

इ0बी0 टायलर ने प्रिमिटिव क्लचर (भोलुम–1) – में लिखा है कि संस्कृति जटिल समष्टि है जिससे ज्ञान, विश्वास, कला, आर्दश, कानून, प्रथाऍ व अन्य आदते व समताऍ सम्मिलित है जिन्हे मानव ने समाज के सदस्य के रूप में प्राप्त किया है।

झारखण्ड के सदान समाज और उनकी संस्कृति किसी एक जाति की समग्र समरूपता से भिन्न ऐसी समन्वित सामुदायिक संरचना है जिससे विविधता के बीच एकता की विशिष्टता सहज ही परिलक्षित हाती है।

सदानों का पर्व त्योहार – सदानों की सांस्कृतिक स्थिति को स्पष्ट करने के लिए सदानों के परम्परागत क्षेत्रीय पर्व – त्योहार तीज, करम, जितिया, नवाखानी, सोहराई, देव उठान, मकर संक्राति, टुसू पर्व इत्यादि को वर्णन किया जायगा।

* एम0ए0, पीएच0डी0, समाजशास्त्र

तीज पर्व – तीज पर्व भादो मास शूक्ल पक्ष तुतीया को मनाते हैं। तीज पर्व में सदान महिलाएं उपवास करती हैं और शिव पार्वती की पूजा करती है और महिलाएँ अपने पति की दीर्घायु एवं सम्पन्नता के लिए शिव – पार्वती से कामना करती हैं।

करम पर्व – करमा पर्व भादो मास के शूक्ल पक्ष एकादशी को मनाते हैं इस पर्व में सदान लड़कियॉ एवं महिलाएँ अपने भाई की लम्बी उम्र के लिए उपवास रखकर अखरा में करम पेड़ की डाली गाड़ कर उसकी पूजा करती हैं। करम कर पूजा के बाद सदान महिलाएँ एवं लड़कियॉ नृत्य करती हैं। दूसरे दिन सुबह करम डाली का विसर्जन कर देती हैं।

जितिया पर्व – जितिया पर्व आश्विन महिना के कृष्णा पक्ष के एकादशी को मनाया जाता है। यह पर्व महिलाएँ अपने पुत्रों के दिर्धाआयु के लिए जीतवाहन भगवान का पूजा करती हैं। जितिया के एक दिन पूर्व महिलाएँ उपवास करती हैं। चाय – पानी तक नहीं पीती हैं। रात में पिपल का डाली या पेड़ गाड़ कर पूजा करती है। दूसरे दिन सुबह अपने कुल देवी देवता और पुर्वजों को दतवन और पानी देता है और उसके बाद मडूआ रोटी, भात – दाल और पांच प्रकार की सब्जी दोना या सखुआ का पत्ता या झींगी का पत्ता पर अपनी पुर्वजों को खाना एवं हड़िया का तपावन देता है उसके बाद माताएँ शर्बत और दूध से पारण करती है और जितिया को अपने गला में डालकर फिर अपने पुत्रों को गला में डालती हैं और फिर माताएँ उस जितिया को सालों भर पहनती हैं। इससे उनके पुत्रों का ग्रह कट जाता है।

नवाखानी पर्व – करम पर्व के बाद नया अन्न खाना ही नवाखानी पर्व है। इसको सदान लोग भी मनाते हैं जब गोंदली, गोड़ा का फसल पक जाता है तो सदान लोग इस नया अनाज को शुद्ध ओखल से चूड़ा बनाकर देव – पितरो को अर्पण करते हैं। इसमें दही – चूड़ा और तपावन चढ़ाते हैं। इसके बाद घर में आये मेहमानों के साथ दही – चूड़ा ग्राहण करते हैं।

दशहरा पर्व – ''सदानों में पहले दुर्गा पूजा साधारण कलश स्थापना और दुर्गा पाठ से सम्पन्न होती थी। कहा जाता है कि रातु महाराजा की बंगाल से आयी महारानी के द्वारा मूर्ति स्थापित कर पूजा की परम्परा शूरू हुई''[3]। सदान लोग दशहरा पर्व आश्विन महीना के शूक्लपक्ष के प्रथम दिन से दस दिनों तक मनाता है। दस दिन पूजा करके मॉ दुर्गा की प्रतिमा को नदी या तालाब में विसर्जन कर देते है।

काली पूजा – कहीं – कहीं काली पूजा अश्विन पूर्णिमा को मनाते है। इसकी लखी पूजा भी कहते हैं। इसको पंचपरगना क्षेत्र के सदान लोग मनाते हैं।

सोहराई पर्व – इस पर्व को दिवाली या दीपावली भी कहते हैं, इसमें साफ – सफाई पर विशेष जोर दिया जाता है। यह पर्व प्रकाश का त्योहार है। कार्तिक महीना के अमावस्या के रात में चारों ओर दीप जलाकर लक्ष्मी एवं गणेश की पूजा की जाती है। पटाखे भी छोड़े जाते हैं। व्यापारी सदान के लोग वर्ष भर का आय – व्यय का लेखा जोखा का नया बही खाता को पूजा करके शुभारम्भ करते हैं। कृषक सदान लोग कार्तिक अमावस्या के दिन पशुओं को नहला कर श्रृंगारित करते हैं। दूसरे दिन गाजे – बाजे के साथ बैल – गाय, भैंस को सड़कों या मैदानों में भड़काते हैं।

छठ पर्व – सदान लोग छठ में सूर्य देव की पूजा विधि – विधान से करते हैं। पुरूषों एवं स्त्रीयॉ भी छठ पर्व मनाते हैं। यह पर्व कार्तिक महीने के शूक्ल पक्ष में मनाया जाता है।

देव उठान – कार्तिक महीना के शूक्ल पक्ष के एकादशी को देव उठान होता है। कुछ सदान लोग इस दिन अपना कुल देवी – देवता को पूजा करते हैं।

अघन संक्रांति पर्व – सदानों द्वारा यह पर्व अघन महीना में मनाया जाता है।

मकर संक्रांति पर्व – सदान लोग मकर संक्रांति पर्व प्रायः 14 या 15 जनवरी को प्रति वर्ष मनाते हैं, ''मकर संक्रांति मनाने की परम्परा सूर्य के दक्षिणायन से उत्तरायन होने के कारण होता है। मकर राशि से लेकर मिथुन राशि तक सूर्य उत्तरायन पर रहते हैं वह कर्क राशि से धनु राशि तक सूर्य दक्षिणायन में रहतें हैं वह जिस दिन मकर राशि में सूर्य आता है, उसी दिन से सूर्य उत्तर की ओर बढ़ने लगता है और समय से हिन्दू सदानों के सारे शुभ कार्य करने का समय शुरू हो जाता है। मान्यता के अनुसार सूर्य के उत्तरायन होते समय अगर किसी व्यक्ति कर मौत हो जाय तो उसे मोक्ष प्राप्त होता है''[4]। सदान लोग इस दिन दही चूड़ा एवं तिलकुट खाते हैं और दान भी करते हैं।

टुसू पर्व – टुसू पर्व मकर संक्रांति(14 या 15 जनवरी) के समय में मनाया जाता है। ''टुसू पर्व में कुऑरी लड़कियॉ दस दिन पहले से एक स्थान पर जमा होकर टुसू गीत गाकर पूजा करते हैं। टुसू पर्व विशेष कर पंचपरगनियॉ क्षेत्र में मनाया जाता है। इसमें चौड़ल को विभिन्न प्रकार के रंग बिरंगी कागजों व फूल मालाओं से सजाया जातर है जो काफी आकर्षक होता है''[5] इसमें जो प्रथम होता है उसे पुरस्कृत किया जाता है।

टुसू पर्व की मान्यताएँ – टुसू पर्व के संदर्भ में तरह – तरह की लोक कथाएँ। ''टुसू जो लड़की थी, को कहीं तात्कालिक समाज के जनी शिकार से जोड़ा गया है, तो कहीं समाज के अगुआ से। कहीं तात्कालिक कृषक समाज का अन्याचारी राजा के खिलाफ लड़ाई लड़नेवाले सैनिकों के नेतृत्वकर्ता, तो कहीं लोकप्रिय राजाा की एकमात्र दुलारी बेटी, जब टुसू नाम की राजकुमारी की समय मौत हो जाती है तो राजा शोक में व्याकुल राजा को संता पके हरने के लिए प्रजा हर साल एक महीने तक टुसू के आगमन के प्रतिकात्मक आवभगत में जुट जाती हैं''[6]। महीने भर चलता है टुसू मेलों का दौर रॉची जिला के पंचपरगना क्षेत्र में। मकर संक्रांति के अवसर पर पहले रॉची जिला के सोनाहातु प्रखण्ड जिले के सीमांत में स्वर्णरेखा राढू व कांची नदी में संगम पर सतीघाट, चांडिल में स्वर्णरेखा नदी के तट पर तथा बुण्डू तमाड़ प्रखण्ड के हाराडीह स्थित महामाया मंदिर में व कांची नदी के किनारे विराट टुसू मेला लगते थे। लेकिन इन दिनों गॉव – गॉव में टुसू मेला लगते हैं। मेला में नाच – गान एवं टुसू गीत भी गाया जाता है।

वसंत पंचमी – यह पर्व माघ महीना के शूक्ल पक्ष पंचमी को मनाया जाता है। इस दिन शंकर जी का तिलक उत्सव मनाया जाता है। सरस्वती माता की मूर्ति पूजा किया जाता है।

शिव रात्रि – शिव रात्रि फाल्गुन महीने के कृष्ण पक्ष के त्रियोदशी को मनाया जाता है। क्योंकि हिन्दू धर्म ग्रंथ तथा परम्परा के अनुसार मान्यता है कि शिव एवं पार्वती का विवाह इसी दिन हुआ था। शिव रात्रि के दिन उपवास करना, शिव के विवाह की पूजा करना हिन्दू सदानों के लिए विशेष महत्व हैं।

फगुआ (होली) – फगुआ पर्व फागुन पूर्णिमा के दूसरे दिन हिन्दू सदान पुरूष – महिला एवं बच्चों सभी धुम – धाम से मनाते हैं। फाल्गुन पुर्णिमा को होलिका दहन किया जाता है।

होलिका दहन के दूसरे दिन होलिका पर जाकर धुल उड़ाता है। एक दूसरे पर किचड़ डाल देता है। रंग लगा देता है। दो – तीन बजे तक कुछ लोग किचड़ एवं रंग खेलता है और शाम चार बजे के बाद अबीर लगाकर नया वर्ष की खुशी मनाता है।

रामनवमी – झारखण्ड के सदान लोग रामनवमी में हनुमानजी का झण्डा घर के पास गाड़ता है और जगह – जगह से रामनवमी का जुलूस निकालता है।

चैत पर्व (सतुआनी पर्व) – यह पर्व 14 अप्रैल को मनाया जाता है। इस दिन यहॉ के सदान लोग सतु और कच्चा आम खाता है। यहॉ इसकी संस्कृति का पहचान है।

बड़पहाड़ी – ''बड़पहाड़ी सम्भवतः मुण्डाओं के बुरू बोंगा का सदान विस्तार है। सदान लोग इस अवसर पर सामुहिक प्रीतिभोज का आयोजन करते थे। इस प्रथा को गॉव की एकता और आत्मीयता के लिए पुनर्जीवित करने की जरूरत है''[7]।

मण्डा पर्व – ''मण्डा पर्व अक्षय तुतीया वैशाख महीना में शुरू होता है। इसमें महादेव की पूजा महादेव मण्डा में होती है। यह त्योहार आदिवासी और सदान दोनों में समान रूप से प्रचलित है इस त्योहार में घर का एक सदस्य जो व्रती होता हैं वह भगता कहा जाता है। उसकी मॉ या बहन भी उपवास रखती है जिसे सोखताईन कहा जाता है। जागरण की रात भगताओं को धूप – धुवन की अग्निशिखा के उपर उल्टा लटकाया झुलाया जाता है जिसे धुऑ सी कहते हैं फिर दहकते अंगारों पर उन्हें चलना होता है जिसे फुलखूंदी कहते हैं। दूसरे दिन भगतिया लोक चरक डांग में झूलते हैं जब तक वह झुलता है तब तक उसकी मॉ या बहन उस खूंटे के नीचे शिच की आराधना करती रहती है''[8] ।

धानबुनी – झारखण्ड के सदान लोग मण्डा के दिन से ही नयी धोती धारण कर खेत में जुताई करता है और बॉस की नई टोकरे में धान ले जाकर बुनता है। एक दो मुट्ठी बुनकर शुभ मुहुर्त में बुनाई आरम्भ करता हॅ इसी को धानबुनी कहते हैं।

आषाढ़ी पूजा – आषाढ़ी पूजा आदिवासी एवं सदान दोनों मनाते हैं। आषाढ़ महीना में अखरा में या घर आंगन में काले रंग की पाठी को बली दिया जाता है और तपावन चढ़ाते हैं।

मनसा पूजा – इसमें मनसा देवी की पूजा करते हैं। बली भी देते हैं। कुछ सदान जीभ में पतला छड़ घोप कर ढ़ोल – नगाड़ा बजाकर टोला मुहल्ला में घूमता है। ''लहेरी जाति मनसा देवी की पूजा दुर्गा – पूजा की तरह मूर्ति बना कर नाग पंचमी के दिन नाग मंत्री लोग अपने घरों में मनसा देवी की पूजा करते हैं''[9]।

रथ यात्रा – झारखण्ड के सदान रथ यात्रा धूम – धाम से मनाता है। ''आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वितीया तिथि को पुरी की तरह बल्भद्र सुभद्रा और जगन्नाथ स्वामी की पूजा अर्चना के साथ रथ यात्रा का आयोजन किया जाता है''[10]। रॉची के जगन्नाथपुर मंदिर से रथ यात्रा मौसीबाड़ी तक जाता है। आठ दिनों के बाद घुरती रथ यात्रा के साथ समारोह समाप्त होता है।

सीतला पूजा – झारखण्ड के ''सदान महिलाएँ चेचक आदि के प्रकोप निवारण के लिए सीतला पूजा करती हैं। इसमें प्राय : भीख मांग कर पूजा करने का विधान है''[11]

रक्षा बन्धन – रक्षा बन्धन श्रावण पुर्णिमा को मनाया जाता है। यह भाई – बहन का प्यार बांटता है। बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधती है और और आर्शिवाद देता है। भाई भी बहन को जीनव भर रक्षा करने के लिए प्रतिज्ञा करता है। बहन भाई को मिठाईयॉ भी खिलाता है।

इंद्र मेला – कुछ लोग इसे ''इन्द्र पूजा'' का प्रतीक और कुछ लोग सागर मंथन का प्रतीक सिद्ध करते हैं। इंद मेला में बॉस से बने एक गोल लम्बे ढ़ाचे के सफेद कपड़े से ढ़क कर सिलाई की जाती है। जिसे टोपर कहा जाता है''[12]

रामरेखा मेला – ''कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर रामरेखा धाम में एक ऐतिहासिक मेला लगता है। उसे रामरेखा मेला कहा जाता है। इस पर एक पौराणिक कथा है कि वनवास के समय राम, लक्ष्मण और सीता रामरेखा धाम पर कुछ दिन ठहरे थे''[13]

जतरा मेला – जतरा मेला में डाइर जतरा सदानों द्वारा मनाया जाता है। जतरा मेला में आदिवासी एवं सदान दोनों का भागीदारी किसी न किसी रूप में अवश्य होता है।

जन्माष्टमी – जन्माष्टमी भादो महीना के अष्टमी के दिन सदानों द्वारा मनाया जाता है। इस दिन कृष्ण जी का जन्म के उपलक्ष में मनाया जाता है।

नवमी डोल मेला – ''रॉची के नजदीक टाटीसिलवे में हर वर्ष होली के ठीक नौ दिन बाद एक बहुत बड़ा मेला लगता है। कृष्ण एवं राधा की मूर्तियों को एक डोली में झुलाया जाता है''[14]

भाषा एवं लोक कथा – ''सदानों की भाषा को आम तौर पर सदानी कहा जाता है। इनके चार मुख्य भेद हैं। नागपुरी, कुरमाली, खोरठा, और पंचपरगनियॉ''[15] ''सदानी या नागपुरी छोटानागपुर के प्राचीन आर्यो का मातृभाषा है''[16]

नागपुरी भाषा – झारखण्ड के रॉची, लोहरदगा, गुमला, सिमडेगा, सिंहभूम जिलों के सदान बोली हैं। मुख्य रूप से इसे दक्षिणी पश्चिमी छोटानागपुर की भाषा है''[17]

कुरमाली भाषा – कुरमाली भाषा का विस्तार संथाल परगना, धनबाद, दक्षिणी गिरिडीह, बोकारो, दक्षिणी हजारीबाग, पूर्वी रॉची(पंचपरगना) आदि क्षेत्रों में बोली जाती है। नागपुरी एवं नागपरी के किंचित परिवर्तन रूप को कुरमाली कहा जाता है''[18]

खोरठा भाषा – खोरठा भाषा के विकास का आधार प्राकृत रहा है। यह मागधी प्राकृत से विकसित हुई भाषा हैं। खोरठा भाषा संथाल परगना से चतरा तक और हजारीबाग से चुटूपालू घाटी या रामगढ़ तक फैला हुआ है''[19]

पंचपरगनिया भाषा – ''पांच परगना क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषा ही पंचपरगनिया हैं पांच परगना तमाड़, बुण्डू, राहे, सोनाहातु, सिल्ली को कहते है यह रॉची जिला का पूर्वी भाग है''[20]

नृत्य एवं गीत(क्ंदबम – डनेपब) – झारखण्ड में ''आदिवासियों की तरह सदानों ने भी नृत्य एवं गीत के दिनावे होते हैं। मुंडारी में कहावत है सेन गे सुसुन, कजि रे दुरंग अर्थात चलना ही नृत्य और बोलना ही गीत है। यहॉ के सदानों पर भी यह कहावत अक्षरतः चरितार्थ होता है''[21]

''सदानों में भी डमकच, झुमटा, मरदानी झूमर, रंग, फगुआ, पावस, उदानी, सोहराई सदानी गीतों के मुख्य भेद है – डमकच, झूमटा, और अंगनई प्रायः महिलाओं द्वारा शादी – विवाह एवं तीज, करम, जितिया आदि पर्वो के अवसर पर नृत्य के साथ गाये जाते हैं मरदानी झुमर और फगुआ पुरूषों के नृत्य गीत, सोहराई पर्व में सोहराई गीत भी सदानों द्वारा गया जाता है। शादी – विवाह में विवाह गीत धान रोपनी में रोपनी का गीत भी गाये जाते है''[22]

''मूल सदानों की संस्कृति में अनार्यपन व आदिमपन के लक्षण आज भी विघमान है''[23]

खेल कूद – झारखण्ड में मनोरंजन के साधन के लिए अनेक प्रकार का खेल खेला जाता है। सदान युवकों कबड्डी, लट्टू, गुडडी, गुल्ली डंटा, लाठी डंडा, डोलपत्ता, कसरत, कुश्ती, इत्यादी लोक प्रिय खेल है। आज कल के युवक, हॉकी, क्रिकेट भौली – बॉल, फूटबॉल आदि भी खेलते हैं।

धर्म तथा अंधविश्वास – कोई पण्डित पुरोहित विश्वास करता है तो कोई मुल्ला मोलवी पर और अंधविश्वास की कुरीतियॉ भी है। झारखण्ड के सदान लोग भी डायन के जादू टोना मानते है। जब किसी व्सक्ति को हैजा, चेचक, कोई बीमारी हो जाता है तो यहॉ के व्यक्ति कहते है कि इसका डायन जादू – टोना कर दिया है।

अध्ययन का उददेश्य – झारखण्ड के सदानों की सांस्कृतिक स्थिति को जानना एवं पता लगाना।

अध्ययन क्षेत्र – प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र रॉची नगर के वार्ड 24 में पुरानी रॉची, भूइया टोली, लेक रोड, कुम्हार टोली, पालकोर्ट हाउस, तेली टैंक रोड आदि मुहल्ले हैं। जहॉ तीन – चार पीढ़ियों से अधिक से सदान रहते आ रहे है।

तथ्य संकलन में यंत्र तथा तकनिकी का प्रयोग – प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन के लिए साक्षात्कार अनुसूचि का प्रयोग किया गया है। साक्षात्कार के अन्तर्गत संरक्षित साक्षात्कार तथा असहगयोगी अवलोकन का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन पद्धति – प्रस्तुत शोध में निर्देशन पद्धति का प्रयोग किया गया है। निदर्शन पद्धति के उददेश्यपूर्ण निदर्शन का प्रयोग किया गया है। निदर्श के रूप में 50 सदान उत्तरदाताओं का चयन किया गया है।

तथ्य विश्लेषण – प्रस्तुत अध्ययन में 50 उत्तरदाताओं से साक्षात्कार अनुसूचि के माध्यम से अध्ययन क्षेत्र में साक्षात्कार लिया गया है औी प्राप्त सूचनाओं के आधार पर तथ्यों को विश्लेषित एवं सारणीकरण किया गया है।

सारणी संख्या – 1

क्षेत्रीय त्योहार मनाने के आधार पर तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण।

क्या सभी क्षेत्रीय त्योहार मनाते है?	संख्या		प्रतिशत		कुल प्रतिशत
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	
हॉ	20	21	40	42	82
नहीं	5	4	10	08	18
कुल योग	25	25	50	50	100

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 50 उत्तरदाताओं मे से कुल 82 प्रतिशत क्षेत्रीय त्योहार मनाने वाले हैं एवं कुल 18 प्रतिशत क्षेत्रीय त्योहार नहीं मनाते है।

अतः निष्कर्षतः कह सकते है कि अधिकांश सदानों सभी क्षेत्रीय त्योहार मनाते है। क्योंकि क्षेत्रीय त्योहार सदानों की संस्कृति कर पहचान है।

सारणी संख्या – 2

सादानों का मातृभाषा के आधार पर तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण।

आप की मातृभाषा क्या है?	संख्या		प्रतिशत		कुल प्रतिशत
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	
सादरी(नागपुरी)	22	21	44	42	86
अन्य भाषा	03	04	06	08	14
कुल योग	25	25	50	50	100

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 50 उत्तरदाताओं मे से कुल 86 प्रतिशत सदानों की मातृभाषा सादरी(नागपुरी) है एवं 14 प्रतिशत अन्य भाषा है।

अतः निष्कर्षतः कह सकते है कि अधिकांश सदानों की मातृभाषा सादरी(नागपुरी) है।

सारणी संख्या – 3

सदानों का अखरा में नृत्य के आधार पर तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण।

क्या सदानों भी अखरा में नृत्य करते है?	संख्या		प्रतिशत		कुल प्रतिशत
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	
हॉ	21	22	42	44	86
नहीं	04	03	08	06	14
कुल योग	25	25	50	50	100

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 50 उत्तरदाताओं मे से कुल 86 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अखरा में नृत्य करते है और 14 प्रतिशत नही करते हैं।

अतः निष्कर्षतः कह सकते है कि अधिकांश सदानों अखरा में नृत्य करते है। जैसे करमा, जितिया पर्व में अखरा में ही नृत्य करते हैं।

सारणी संख्या – 4

सदान लोग त्योहार में ढ़ोल मांदर बजाकर नृत्य करने के पक्षधर के आधार पर तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण।

क्या सदानों त्योहार में ढ़ोल मांदर बजाकर नृत्य करते है?	संख्या		प्रतिशत		कुल प्रतिशत
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	
हॉ	23	24	46	48	94
न्हीं	02	01	04	02	06
कुल योग	25	25	50	50	100

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 50 उत्तरदाताओं मे से कुल 94 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा है कि त्योहार में ढ़ोल मांदर बजाकर नृत्य करते है और 6 प्रतिशत मात्र ढ़ोल मांदर बजाकर नहीं करते हैं।

अतः निष्कर्षतः कह सकते है कि अधिकांश सदानों पर्व त्योहार में ढ़ोल मांदर बजाकर नृत्य करते है।

सारणी संख्या – 5

सदान लोग मेला जतरा में घुमने के आधार पर तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण।

क्या सदानों मेला जतरा घुमने जाते है?	संख्या		प्रतिशत		कुल प्रतिशत
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	
हॉ	19	20	38	40	78
नहीं	06	05	12	10	22
कुल योग	25	25	50	50	100

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 50 उत्तरदाताओं मे से कुल 78 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा है कि सदान लोग भी मेला जतरा घुमने जाते है और 22 प्रतिशत मेला जतरा घुमने नहीं जाते है।

अतः निष्कर्षतः कह सकते है कि अधिकांश सदानों मेला जतरा घुमने के पक्षधर है।

सारणी संख्या – 6

जादू – टोना/भूत– प्रेत/डायन में विश्वास करने के आधार पर तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण।

क्या जादू–टोना/भूत–प्रेत/डायन में विश्वास करते है?	संख्या		प्रतिशत		कुल प्रतिशत
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	
हॉ	13	15	26	30	56
नहीं	12	10	24	20	44
कुल योग	25	25	50	50	100

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 50 उत्तरदाताओं मे से कुल 56 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा है कि जादू – टोना, भूत– प्रेत में विश्वास करते है एवं 44 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जादू – टोना, भूत– प्रेत में विश्वास नही करते हैं।

अतः निष्कर्षतः कह सकते है कि सदान समाज में आज भी जादू – टोना, भूत– प्रेत पर अधिकांशतः विश्वास करते हैं यानि समाज में अंधविश्वास भरा हुआ हैं।

निष्कर्ष –

उपर्युक्त विवेचन विश्लेषण एवं सारणीकरण से सदानों की सांस्कृतिक स्थिति स्वयं सिद्ध हो जाती है। सदानों की संस्कृति में अनार्यपन व आदिमपन के लक्षण आज भी विधमान है। पर्वतो, नदीयों, वृक्षों के खुले परिवेश में महादेव मण्डा देवी, गुड़ी पर्व त्योहारों, करम, जितिया, नवाखानी, सोहराई, देव उठान, मकर संक्रांति, टुसू पर्व, शिव रात्रि, होली, रथ यात्रा, जतरा मेला, मनसा पूजा, नाग पूजा, इत्यादी, और खेल, नृत्य, संगीत का स्वरूप आज भी सदानों में विधमान है। लेकिन यहॉ के कुछ सदानों बाहरी आगन्तुक के सम्पर्क में आकर अपनी संस्कृति को छोड़कर बाहरी आगन्तुक की संस्कृति को अपना रहा है। इसलिए निष्कर्ष रूप मे कह सकते है कि सदानों की सांस्कृतिक स्थिति में अनुकूलनशील परिवर्तन हो रहा है।

संदर्भ सूची

1. गिरिराज, गिरिधारी राम गौंझू(1990) पीटर शांति नवरंगी व्यक्तित्व एवं कृतित्व पझरा प्रकाशन, नागपुरी प्रचारिणी सभा, रॉची पृष्ठ – 7–8
2. मजुमदार डी0एन0 एवं मदन टी0एन0(1970) ऐन इन्ट्रोडक्शन ऑफ सोशल एन्थोपोलोजी, एशिया पब्लिशींग हाउस न्यू दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 13
3. केशरी बी0पी0(1992) झारखण्ड के सदान, छोटानागपुर सांस्कृति संघ प्रकाशन, रॉची, पृष्ठ – 88

4. महतो सदानन्द (14 जनवरी 2010) दैनिक जागरण प्रकाशन, कोकर, रॉची, पृ0सं0– 5
5. वही पृ0सं0– 9
6. वही पृ0सं0– 9
7. केशरी बी0पी0(1992) झारखण्ड के सदान, छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ (प्रकाशन), रॉची, पृ0सं0– 88
8. तिवारी आर0के0(2003) झारखण्ड की रूपरेखा, शिवंगन पब्लिकेशन, रॉची पृ0सं0– 500
9. केशरी बी0पी0(1992) झारखण्ड के सदान, छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ (प्रकाशन), रॉची, पृ0सं0– 86
10. वहीं, पृ0सं0–89
11. वहीं, पृ0सं0–86
12. वहीं, पृ0सं0–89
13. वहीं, पृ0सं0–89–90
14. उपाध्याय बैद्यनाथ(2005) झारखण्ड अपडेट, स्पर्धा प्रकाशन, जमशेदपुर, पृ0सं0– 154
15. केशरी बी0पी0(1992) झारखण्ड के सदान, छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ (प्रकाशन), रॉची, पृ0सं0– 89
16. केशरी बी0पी0(2009) छोटानागपुर का इतिहास, कुछ सुत्र कुछ संदर्भ प्रकाशक नागपुरी संस्थान, पिठोरीया, रॉची, पृ0सं0–125
17. तिवारी आर0के0(2003) झारखण्ड की रूपरेखा, शिवंगन पब्लिकेशन, रॉची, पृ0सं0– 600
18. वहीं, पृ0सं0–609
19. वहीं, पृ0सं0–594
20. वहीं, पृ0सं0–609
21. केशरी बी0पी0(1992) झारखण्ड के सदान छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ (प्रकाशन), रॉची, पृ0सं0– 91
22. वहीं, पृ0सं0 – 91–92
23. गिरिराज, गिरिधारी राम गौंझू (2004) महाराजा मदरा मुण्डा, पझरा प्रकाशन, नागपुरी प्रचारिणी सभा, रॉची, पृ0सं0 – 25